राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृतान्त

अंक ३] तृतीय विधान सभा के तृतीय सत्र, १९६३ का तृतीय दिवस [संख्या ३

शुक्रवार, दिनांक १ मार्च, १९६३

विधान सभा की बैठक म. पू. ११ बजकर ५ मिनट पर विधान सभा भवन, जयपुर, में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के निधन पर श्रद्धांजलियां

श्री हरिभाऊ उपाध्याय (शिक्षा मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, आज यह दुःखद समाचार कि हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अब संसार में नहीं रहे, केवल इस सदन में ही नहीं, भारत में ही नहीं, मैं समझता हूं, सारे विश्व में बड़े शोक और दुःख के साथ सुना जायगा। गांधी युग के एक महान्, निर्मल और तेजस्वी नक्षत्र के समान वे थे। जब से उन्होंने अपने जीवन का श्रीगणेश किया तब ही से उन्होंने अपने को सार्वजनिक क्षेत्र में और सेवा के क्षेत्र में लगा दिया। विद्यार्थी जीवन में वे होनहार विद्यार्थी रहे, फिर वकालत की परीक्षा पास करने के बाद वकालत की। पांच-सात साल तो वकालत में भी वे काफी अग्रणी समझे जाते थे और यहां तक कि वहां के लॉ कॉलेज के लेक्चरार नियुक्त किये गये। इसके बाद इस पीढ़ी में देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन की जो जो लहरें आई उन सबसे वे प्रभावित हुए। स्वदेशी आन्दोलन आया तो उसमें उन्होंने भाग लिया, कांग्रेस की स्थापना हुई तो वे कांग्रेस में आये। फिर गांधी युग आया, उनका दौर आया तो गांधीजी से प्रभावित हुए और अन्त तक आप और हम सब जानते हैं और मानते हैं कि महान् गांधीवादी गांधीनिष्ठ के रूप में वे माने जाते हैं। जब से वे कांग्रेस में आये, कट्टर कांग्रेस भक्त रहे, कट्टर गांधीजी के अनुयायी रहे। राजनैतिक क्षेत्र में आपस में भी संघर्ष होते हैं उन संघर्षों में भी उन्होंने चाहे वे सहयोगी सहयोगियों में हुए हों या सहयोगी असहयोगी दलों में हुए हों कांग्रेस के आपस में या दूसरों के साथ हुए हों और जहां तक ब्रिटिश हुकूमत के साथ संघर्ष का प्रश्न रहा है, वे इन सब में सदा अग्रणी रहे। परन्तु सबसे बड़ी प्रसन्नता की, आदर की बात जो थी वह यह थी कि इन संघर्षों के बावजूद भिन्न भिन्न दलों के नेता, अनुयायी और यहां तक कि ब्रिटिश सरकार, जिसके खिलाफ जीवन भर संघर्ष किया, वे सदा उनको श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते रहे।

यह कोई अत्युक्ति नहीं होगी, सदन के सभी दलों के माननीय सदस्य इसे स्वीकार करेंगे कि भारत में उनके समान देवोपम

(श्री हरिभाऊ उपाध्याय)

व्यक्ति और मिलना मुश्किल है। उनका जीवन बड़ा सरल था। जो भी उनके सम्पर्क में आता था वही उनकी विनम्रता और सहृदयता से प्रभावित होता था। ऐसा कहना चाहिये कि हमारे देश का एक महान् सात्विक, महान् कर्णधार मानव उठ गया; जिसका हमें दुःख है।

मैं समझता हूं, मैं जब यह विचार प्रकट करता हूं कि देश में अभी इस छोर से उस छोर तक किसी भी प्रान्त में चले जाइये, किसी भी भाषा-भाषी से मिलिये, किसी भी दल वाले से मिलिये, सभी समान श्रद्धा से उनको देखते रहे हैं और उसी श्रद्धा और आदर के रूप में उनको आज श्रद्धान्जलि मिली है।

वे कांग्रेस के एक महान् स्तम्भ रहे, अन्त तक रहे। वे हिन्दी के केवल एक सुलेखक ही नहीं थे, बल्कि एक पोषक भी थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बहुत प्रारम्भ में ही वे सदस्य बन चुके थे और उनके चले जाने से, मैं समझता हूं, अपने देश की और बहुत कुछ विश्व की जो हानि हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है। मैं अपनी तरफ से और जिस दल की ओर से मैं बोल रहा हूं–कांग्रेस दल की ओर से,–दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर): अध्यक्ष महोदय, देश में एक देश-रत्न के निधन पर सन्नाटा छाया हुआ है। डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी, जो 'राजेन्द्र बाबू' के नाम से प्रख्यात् थे, महात्मा गांधी के पांच अन्तरंग सुप्रसिद्ध साथियों में से एक थे। वे परम सज्जन, परम धार्मिक निष्ठावान विभूति थे। उनके विरोधी भी उनको परम श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे। वे विधान निर्मात्री परिषद् के अध्यक्ष थे। वे भारत सरकार के मंत्री रह चुके थे और देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति को उन्होंने पूरे १० वर्ष तक सुशोभित किया था। उनके निधन पर देश को एक महान् क्षति पहुंची है। मैं मेरी पार्टी की ओर से और मेरे व्यक्तिगत रूप से इस देश की महान् विभूति के निधन पर संवेदना प्रकट करता हूं और सश्रद्धा सादर इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर): अध्यक्ष महोदय, डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी के निधन से हमें जिस प्रकार की क्षति हुई है उस क्षति का अनुमान हम देश के वर्तमान संकट से यदि करने की चेष्टा करेंगे तो मैं यह कहूंगा कि हमारे देश में वह एक इस प्रकार के व्यक्ति थे जिनके रहन-सहन से, जिनकी विचार-धारा से और जिनके कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर हम किसी भी प्रकार के संकट का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। डॉक्टर साहब का जीवन पूर्णतया भारतीय जीवन था, उनकी विचारधारा पूर्णतया भारतीय थी। उनके जीवन से भारत के आध्यात्मिक दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष में ज्ञान होता था। उनकी सादगी से भारतीयता का पूरा चित्र उनके शरीर के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता था। यह हमारा दुर्भाग्य है कि देश का एक ऐसा महान् व्यक्ति, जिसके जीवन के हर पहलू से हमें भारतीयता की प्रेरणा मिलती है वे संसार से विदाई ले चुके हैं। मैं ऐसा समझता हूं कि आज के इस संकट में और देश की इन परिस्थितियों में डॉक्टर साहब का जीवन, डॉक्टर साहब की विचारधारा और उनका दृष्टिकोण यदि हम ध्यान में

(श्री भैरोंसिंह)
रख कर चलें तो उनसे हमें हर समय, हर घड़ी स्फूर्ति ही मिलेगी। भारतवर्ष के अन्दर अपने देश की विचारधारा को लेकर जिस व्यक्ति ने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया हो वह संघर्ष चाहे हिन्दी के लिए हो, वह संघर्ष चाहे भारतीय संस्कृति के लिये हो, वह संघर्ष चाहे भारतीय परम्पराओं के लिये हो उस संघर्ष में उन्होंने किसी प्रकार की कमी नहीं दिखाई और उसी का परिणाम था कि उस संघर्ष में भी सफलता मिली और देश को वे प्रेरणा देते रहे। ऐसी स्थिति में देश को ऐसे रत्न का निधन बड़े दुख का विषय है। लेकिन ईश्वरीय शक्ति के सामने किसी का वश नहीं चलता है। इस समय केवल भगवान् से यही प्रार्थना कर सकते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। उस दिवंगत आत्मा से जो हमें प्रेरणा मिली है उसको देश के कामों में लगायें। यह जो प्रस्ताव शिक्षा मंत्री महोदय ने प्रस्तुत किया है मैं अपने दल की ओर से तथा अपनी ओर से उसका समर्थन करता हूं और श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री रामकिशन (बैर): अध्यक्ष महोदय, डा० राजेन्द्रप्रसाद गांधीजी के युग के एक महान् पुरुष थे। आज वे हिन्दुस्तान से उठ गये हैं। उनके निधन से देश को बहुत बड़ी क्षति हुई है और हम सब को भी बड़ा दुःख हुआ है। डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी न केवल भारतीय राजनीति के युगदृष्टा और भारतीय परम्पराओं के पोषक थे, बल्कि लोक-भूषा, लोक-भाषा और लोक-भोजन के प्रतीक थे। उनके जीवन से हर आदमी, जो हिन्दुस्तान की मिट्टी में जन्म लेता था, प्रेरणा पाता था। चीनी आक्रमण के बाद २८ अक्टूबर को डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी से मिलने का हमें मौका मिला था। उसके बाद उनके विचार जो सामने आये थे उनसे देश के सरकारी पक्ष को एवं जो दूसरी राय रखने वाले थे उनको भी प्रेरणा मिलती थी। मैं समझता हूं कि डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी की पूर्ति इस युग में संभव हो सकेगी; यह नहीं कहा जा सकता। दूसरे विषय भी हो सकते हैं। सरकार में भी वे एक लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति रहे। इतिहास इसका साक्षी होगा कि वे कितने ऐतिहासिक व्यक्ति थे। जब सौ, दो सौ वर्ष बाद इतिहास लिखा जायगा तब यह पूर्ण रूप से मालूम हो जायगा कि वे कितने ऐतिहासिक पुरुष थे। हिन्दुस्तान की संस्कृति और सभ्यता के वे प्रतीक थे, भारतीय जनजीवन के वे पोषक थे। जितनी दक्षता डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी ने प्राप्त की शायद दूसरे प्राप्त न कर सकें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं मा० शिक्षा मंत्री जी ने जो प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करता हूं और मेरे दल की ओर से और मेरे व्यक्तिगत रूप से श्रद्धांजलि अर्पित करूंगा और यह आशा करूंगा कि हम उनका जीवन जो सार्वभौम दर्शन रहा है उससे प्रेरणा लेते रहेंगे।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर): अध्यक्ष महोदय, आज हमारे बीच से एक महान् विभूति, जो भारत के राजनैतिक रंगमंच पर जब से हमारे यहां राष्ट्रीय आंदोलन ने एक तीव्र गति धारण की, तब से उसमें एक प्रमुख नेता के रूप में हिस्सा लेते रहे हैं, वह महान् विभूति आज हमारे बीच से उठ गई। डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपनी सादगी, अपनी संदीजगी और त्यागमय जीवन से जिस प्रकार देश के नव जवानों को, देश की जनता को प्रभावित किया है वह अपने आप में एक अनुपम मिसाल है। मुझे याद है कि सन् १९३७ में जब पहली बार दिल्ली में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के

(श्री रामानन्द अग्रवाल)
सैशन के अवसर पर एक विद्यार्थी के नाते मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला है उस समय उनकी सादगी से मैं अत्यंन्त दंग रह गया। आज भी उनकी वह तस्वीर मुझे याद आ रही है। जब वे एक सादे पाजामे और कुर्ते में थे और पाजामा ऐसा था कि जिसमें तीन/चार पेबन्द लगे हुए थे वे हिन्दुस्तान के इतने बड़े राजनैकित संघर्ष चलानेवाले नेताओं में थे। उनकी आवाज और उनके विचारों को सुनने के लिये किस प्रकार हिन्दुस्तान की जनत लालायित रहती थी, उनका कितना असर पड़ता था, वह उस अधिवेशन में देखने को मिला। जब एक गंभीर निर्णय ऑफिस संभालने के बारे में लिया जाने वाला था, मुझे याद है, गांधीजी के बाद उनकी राय इस प्रश्न पर जो थी वही काफी हद तक निर्णायक राय के रूप में रही। उन्होंने अपने जीवन को इस प्रकार का बनाया कि उससे हिस्दुस्तान की जनता को प्रेरणा मिली है। एक वकील होते हुए और ऐसे कुल में जन्म लेकर जो बहुत शिक्षित और बाबू कुल कहा जाता है, उन्होंने किसानों के संघर्ष में बहुत आगे बढ़ कर हिस्सा लिया है। चम्पारन के किसानों के आंदोलन में उन्होंने गांधीजी के साथ आगे बढ कर हिस्सा लिया, वह किसान वर्ग भुला नहीं सकता। उन्हीं आंदोलनों के जरिये जिस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ नील वगैरह के आंदोलन में जिस प्रकार राजेन्द्र बाबू ने लीड लिया उस संघर्ष का, हिन्दुस्तान के किसान आंदोलनों में एक बड़ा महत्वपूर्ण इतिहास है। मैं अपने दल की ओर से और मेरी ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और जो प्रस्ताव रखा गया है उसका समर्थन करता हूं।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर): अध्यक्ष महोदय, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के अकस्मात् निधन से देश के हर व्यक्ति को बड़ा भारी धक्का लगा है। राजेन्द्र बाबू से कई दफा मुझे व्यक्तिगत सम्पर्क का भी मौका मिला है। जब मैं दस साल तक वर्धा में रहा व वर्धा में एक दफा सन् ४५ में डॉ० राजेन्द्र बाबू काफी अस्वस्थ हो गये थे; उनकी सेवा सुश्रुषा में मुझे तीन दिन के लिये लगाया गया था। वे अस्वस्थ थे, फिर भी अगर उनको पानी पीना है तो वे खुद अपने हाथ से पानी पीते थे। मैं सोचता था कि फिर मैं किस काम के लिये रखा गया हूं। जब मैं उनसे निवेदन करता कि पानी मैं पिला दूंगा तो उस पर उनका यही उत्तर रहता था कि मैं खुद पी लूंगा। किसी भी काम को वे दूसरे से कराने के लिये कभी नहीं कहते थे, कतई अपने काम को दूसरे से कराने के लिये उनकी इच्छा नहीं होती थी। उसके बाद, मैंने यह भी देखा कि एक समय महात्मा गांधी के जन्म दिन के अवसर पर वर्धा से सब साथी सेवाग्राम गये। मैं भी, जो स्वावलम्बी विद्यालय वर्धा में पढ़ता था, उन छात्रों के कैप्टिन की हैसियत से आर्यनायकम के साथ सबको लेकर गया। जब वहां गये उस दिन क्या था कि सेवाग्राम आश्रम के एक पिंजरे में सांप रखा हुआ था। मैंने यह सोचा और श्री रामकृष्णजी बजाज, जो जमनालालजी बजाज के भाई थे और लीला अब्दुलगफ्फारखां ये तीनों वहां पर थे। अब्दुलगफ्फारखां भी वहां बैठे थे। मैंने उनसे पूछा कि यह सांप किसने बन्द किया है; उन्होंने कहा कि इसको सजा दी गई है, यह हिंसक प्राणी है। कहां मिला? उन्होंने कहा जब सवेरे महात्माजी अपने नित्य कर्म के लिये निवृत्त होने गये उस स्थान पर यह बैठा हुआ था। गांधी जी अपने सारे कार्यक्रम मे निवृत होकर आये

(श्री मुरलीधर व्यास)

तो उन्होंने कहा उधर कोई जाना नहीं वहां हिंसक प्राणी बैठा हुआ है। उसके बाद आश्रम के लोगों ने उसको पकड़ा और उसको यहां ले आये और उसको यहां बन्द कर दिया था। इसको आज की ही सजा है, यह बन्द रहे, यह राजेन्द्र बाबू ने जवाब दिया था। सजा इसको इतनी ही दी है कि इसको एक दिन यहां रखा जाय और उसके बाद उसको मुक्त कर दिया गया।

इसी प्रकार जब राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति बने और जब वे सरकारी दौरे पर अलवर आये उस समय नीमराना के किसानों पर लगान बहुत ज्यादा था। नीमराना किसानों के आंदोलन का नेतृत्व मेरी पार्टी ने मुझे दिया था। हम उनसे मिलना चाहते थे, लेकिन जो अधिकारी थे वे हमें मिलने नहीं देना चाहते थे। उस समय हमें उनसे बातचीत करने का मौका नहीं मिला। उस प्रदर्शन में हजारों किसान थे। किसानों को दूर से देख कर उन्होंने अपनी गाडी रोकी और पूछा, क्या बात है? उनको कहा गया कि किसान अपनी मांगें लेकर आये हैं और आपसे मिलना चाहते हैं। उन्होंने फौरन कहा कि मैं अलवर जा रहा हूं अलवर में आकर मिल लें। उनसे हमारी मुलाकात राजमहल में हुई। दस मिनट वे मिले। उन्होंने उस समय के राजस्व मंत्री से मिलने की चेष्टा भी की लेकिन वे मिले नहीं, लेकिन उन्होंने यह कहा कि मैं इसमें जल्दी से जल्दी कार्यवाही करने के लिये कहूंगा। दो-तीन दफा जब भी उनसे मुझे मिलने का मौका मिला, मैं ऐसा अनुभव करता था कि वे अपने आप में पूरे स्वावलम्बी थे। उनकी आत्मा एक किसान की आत्मा थी, उनका जीवन अपने आप में एक जनतन्त्रीय जीवन था। राजेन्द्र बाबू का जीवन शुरू से लेकर आखिर तक एक त्यागमय जीवन रहा है। जहां तक त्याग का सवाल है, गांधीजी के बाद में उनके आदर्श के अनुसार चलनेवाले वे ही व्यक्ति थे। गान्धीजी के निधन के बाद जितना सदमा देश को पहुंचा उतना ही सदमा देश को आज राजेन्द्र बाबू के निधन से पहुंचा है। राष्ट्रपति के पद से जब वे विदा हुए उस विदाई के समय उनके साथ काम करने वाले छोटे-छोटे कर्मचारियों के आंसू आगये कि आज राष्ट्रपति हमसे अलग हो रहे हैं। इतना ही नहीं; अपने छोटे कर्मचारियों से विदा लेते हुए राजेन्द्र बाबू की आंखों में भी आंसू आ गये। यह सब यह बताता है कि उनका कितना मधुर संबंध छोटे कर्मचारियों के साथ रहा था। राजेन्द्र बाबू जब राष्ट्रपति पद से विदा हुए तो छोटे-बड़े सभी कर्मचारियों से हाथ मिलाते हुए और अश्रु बहाते हुए विदा हुए। उनके सादे जीवन और सादगी से सारा देश बहुत प्रभावित था। राजेन्द्र बाबू सही दिशा में किसानों के नेता थे, उनमें किसान की आत्मा थी; उनकी आवाज सारे राष्ट्र की आवाज थी। वे जो कुछ कहते उसको सारा देश बहुत ध्यान के साथ सुनता।

चीन के संबंध में आपने सबने देखा होगा कि राष्ट्रपति के पद से अलग होने के बाद भी चीन का जो हमला हुआ उससे उनके दिल को बड़ा धक्का लगा। उनके बाद के वक्तव्यों से यह अन्दाज लगा सकते हैं चीन के आक्रमण का मुकाबला किस प्रकार से करना चाहिये, इस पर भी उनके अपने विचार थे।

यहीं तक नहीं; तिब्बत के बारे में तो उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जिस वक्त तिब्बत पर चीन ने आक्रमण किया, उस

(श्री मुरलीधर व्यास)

वक्त तिब्बत के मामले में हमने जो निर्णय लिया और उस समय उसकी मदद नहीं की तो वह एक बड़ा भारी पाप हमने किया। बहुत दुखी हृदय से ये उनके उद्गार निकले थे। इतना दिल खोल कर अपनी बात कहने वाला वह अनुपम व्यक्तित्व था। आज वह हमारे बीच नहीं है। पर मैं महसूस करता हूं कि गांधीजी के बाद में देश में ऐसा दूसरा कोई व्यक्ति उनके सिवाय नजर नहीं आता था जो हमें यह कह सके और जिनके बारे में हम विश्वास से यह कह सकें कि उनकी आवाज राष्ट्रीय आवाज है। ठीक बात है; हमारे देश में आज भी और बहुत बड़े नेता हैं, पर उनकी अपनी परम्परायें हैं। जहां तक राजेन्द्र बाबू का सवाल है, मैं समझता हूं कि आज उनके निधन से देश बहुत अधिक दुखित हुआ है, सबको धक्का लगा है, और इस संबंध में जो भी शोक-प्रस्ताव माननीय मंत्री महोदय ने रखा है उसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं और अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री केदारनाथ (गंगानगर): अध्यक्ष महोदय, डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी के निधन से हम सब को शोक होना स्वाभाविक है। उनको हम सदा श्रद्धा और इज्जत की दृष्टि से देखते रहे हैं। उनका जीवन नोटेबल कॉन्ट्रीब्यूशन का हमारे सामने रहा। स्टूडेन्ट की लाइफ में उन्होंने बड़ी एग्जेम्पलरी प्रोफिशिएन्सी एटेन की। उनका थ्रू आउट एक चेकर्ड लाइफ विथ नोटेबल कान्ट्रीब्यूशन रहा। वकालत उनकी एनवियेबल ऑर्डर ऑफ स्टेंडिंग की रही। इसके बाद वे राष्ट्र के स्वाधीनता आंदोलन में उतरे। लोगों ने वहां उनको एक आदर्श योद्धा के रूप में, नेता के रूप में और अनुपम सत्याग्रही के रूप में और बहुत ऊंचे विचारक के रूप में पाया।

उनके गंभीर व्यक्तित्व पर संदीजगी और सादगी की गहरी छाप मिलेगी, अगर हम उनके अतीत के इतिहास को उठा कर देखें तो। उनके जीवन की एक ग्लोरियस हिस्ट्री रही है। देश के स्वाधीनता के आंदोलन में देश के प्रति उनकी बड़ी डिस्टिन्गिवशड और स्पेलन्डिड सेवायें रही हैं।

इसके बाद स्वाधीनता के आने पर इन्टेरिम केबिनेट के वे मेम्बर रहे और कॉन्स्टीट्यूइन्ट असेम्बली के अध्यक्ष रहे। दस साल तक राष्ट्रपति के रूप में रह कर उन्होंने देश की अनुपम सेवायें कीं। यह उनके जीवन का एक गोल्डन चैप्टर था, जो देश की अनुपम सेवाओं से भरा पड़ा है। जो गोल्डन चैप्टर उनके जीवन की ग्लोरियस हिस्ट्री का है, वह हमारी आनेवाली जेनरेशन को एक प्रेरणा और उत्साह का अनवरत स्रोत प्रदान करता रहेगा।

एक टूम्ब और मोन्यूमेन्ट के रूप में, अपने देश के प्रति कर्तव्य निभाने के रूप में, हमारी आगे की पीढी को एक प्रेरणा और उत्साह प्रदान करते रहेंगे वे।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से और माननीय सदस्य साथी जो ईन्डिपेन्डेन्ट्स, कहलाते हैं, उनकी तरफ से अपनी श्रद्धांजलि उनको अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष: डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद के निधन पर जो भावनाएं माननीय सदस्यों ने व्यक्त की हैं, उनमें मैं भी अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

Page No. 7

(श्री अध्यक्ष)

उनके निधन से जो हमारे राष्ट्र को क्षति हुई है उसे पूरा करना हमारे लिये असम्भव है। वे आधुनिक युग के बहुत ही बड़े नेता थे और हमारे देश को आजादी दिलाने में जो भी संग्राम हुए उनमें उनका हमेशा एक प्रमुख स्थान रहा।

आजादी प्राप्त होने के बाद भी डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी ने हमारी देश की बडी सेवायें की। हमारे गणतन्त्र के वे प्रथम राष्ट्रपति थे और उनको दुबारा भी हमारे देश का राष्ट्रपति चुना गया और जिस तरह से उन्होंने उस स्थिति में कार्य किया, हमारे देश को वह एक तरह से मार्ग-दर्शन देगा। अपने कार्यों से, अपने विचारों से, अपने रहन सहन के तरीकों से उन्होंने जो आदर्श हमारे देश के सामने प्रस्तुत किये हैं वे हमें अच्छी तरह से याद हैं और हमें उनको आगे भी याद रखना है।

हम उनके प्रति सबसे सही श्रद्धांजलि तो यह अर्पित कर सकते हैं कि जो सादगी और सरलता उनके विचारों में और उनके दैनिक जीवन में थी, जिस उच्च कोटि का व्यक्तित्व उसमें प्रस्फुटित हुआ था उसको लेकर हम हमारे सामने एक आदर्श रखें और यथा-संभव उस ओर अग्रसर होने की कोशिश करें तो मैं समझता हूं कि हमारे राष्ट्र का सामाजिक व राजनैतिक जीवन एक बहुत अच्छे स्तर का बन सकता है।

उनके निधन से देश भर में शोक व्याप्त हो गया है और विशेष तौर से इसलिये कि गांधीवादी विचारधारा के जो भी सिद्धांत हैं उनको बाबूजी ने अपने जीवन में जिस हद तक उतारा और जिस हद तक उतारने में वे सफल हुए उस हद तक किसी भी व्यक्ति के लियें अपने दैनिक राजनैतिक जीवन में उतारना संभव नहीं हो सका। यह उनकी देश को कोई कम देन नहीं है और मैं आशा करता हूं कि उनके जीवन से हम सबको और हमारे राष्ट्र को और राष्ट्र के सब लोगों को बहुत वर्षो तक, सैंकडों वर्षों तक प्रेरणा मिलती रहेगी और जो उन्होंने पद-चिन्ह हमें बताये हैं, जो आदर्श उन्होंने प्रस्तुत किये हैं, सही माने में हम सब उन पर चलने की कोशिश करेंगे।

अब मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि कृपया वे खडे हो जावें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(सदन के सभी माननीय सदस्यों ने दो मिनट मौन खडे रह कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना की)

उनके शोक संतप्त परिवार को, जो माननीय सदस्यों ने सदन में भावनायें व्यक्त की हैं, उनकी वे भावनाएं पहुंचा दी जावेंगी।

सदन की कार्यवाही कल प्रातः ११ बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. पू. ११.३० बजे दिनांक २ मार्च, १९६३ तक के लिये स्थगित हुई)

संक्षिप्त विवरण

(शुक्रवार, दिनांक १ मार्च, १९६३)

भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ० राजेन्द्रप्रसाद स्कम्भ ४६९ के प्रति श्रद्धांजलियां

भूतपूर्व राष्ट्रपति, स्वर्गीय डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के निधन पर शिक्षा मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय, विरोधी दल के नेता महारावल श्री लक्ष्मणसिंह, श्री भैरोंसिंह, श्री रामकिशन, श्री रामानन्द अग्रवाल, श्री मुरलीधर व्यास व श्री केदारनाथ ने अपनी अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करते हुए संवेदना प्रकट की। तदुपरान्त अध्यक्ष, श्री रामनिवास मिर्धा ने सदन द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं में अपनी भावनाओं को भी सम्मिलित करते हुए शोक प्रकट किया।

इसके पश्चात् सदस्यों द्वारा कुछ मिनट मौन खडे रह कर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

सदन की बैठक प्रातः ११.३८ बजे स्वर्गीय डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सम्मान में शनिवार, दिनांक २ मार्च, १९६३ को प्रातः ११ बजे स्कम्भ तक के लिये स्थगित की गई।

शनिवार, दिनांक २ मार्च, १९६३ को कार्य-सूची

(१) अधिक अनुदानों एवं अनुपूरक अनुदानों की मांगों के विवरणों का उपस्थापना

(२) प्रवर समिति के प्रतिवेदनों का उपस्थापन:--

(क) राजस्थान हकशफा विधेयक, १९६२

(ख) राजस्थान कोलाहल तथा संगीत नियंत्रण विधेयक, १९६२

(ग) राजस्थान बिक्री कर संशोधन विधेयक, १९६२

(३) राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद।

शुद्धि-पत्र

(शुक्रवार, १ मार्च, १९६३)

स्कम्भ	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
१	२	३	४
४७१	२५	ओर से,–	ओर से—
४७४	अन्तिम	मे आल	में ऑल
४७५	८	राजनैकित संघर्ष	राजनैतिक संघर्ष
,,	१०	की जनत	की जनता
,,	२५	बढ कर	बढ़ कर
४७६	११	अ ने हाथ	अपने हाथ
४८०	११	डिस्टिन्गिवशड और स्पेल–न्डिड	डिस्टिंग्विश्ड और स्प्ले-न्डिड
,,	१४	कॉन्स्टीटयुइन्ट	कॉन्स्टीट्युएन्ट्स
,,	अन्तिम से ७	ईन्डिपेन्डेन्ट्स	इन्डिपेन्डेन्ट्स
४८२	,, ,, द्वितीय	१९६३ तक	१९६३ के ११ बजे तक-
४८३	२	स्कम्भ ४६९ क प्रति श्रद्धा-जलियां	के प्रति श्रद्धाञ्जलियां स्कम्भ ४६९
४८३ का द्वितीय कॉलम	८	का उपस्थापना	का उपस्थापन ।